''इन्दौर महानगर के कचरे का प्रबंधन एवं निपटान''

भरत कुमार पाटीदार
पीएच.डी. शोधार्थी (भूगोल)
शोध केन्द्र : भेरूलाल पाटीदार शासकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू, जिला इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

सांराश :

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी का सपना था कि हमारा भारत स्वच्छ एवं सुन्दर बने। लेकिन यह सपना आज भी पूरा नहीं हुआ है। महात्मा गॉधी के सपने को पूरा करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को गांधी जयंती के दिन ''स्वच्छ भारत अभियान'' की शूरूआत की गयी। इस अभियान के अन्तर्गत कचरे को संसाधन के रूप में देखा गया है।

शहरों में ठोस कचरा प्रबंधन एक समस्या का विषय बनता जा रहा हैं बढ़ती हुई आबादी के कारण कचरे की मात्रा में भी वृद्धि हुई हैं। पर्यावरण संरक्षण की हम जब भी बात करते हैं तो सर्वाधिक चर्चा वाले मुद्दे जल, वायु और भूमि प्रदूषण के होते हैं जिसका मुख्य कारण ठोस अपशिष्ट होता हैं। इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि शहरों के औद्योगिक विकास और हमारी दिनचर्या में आऐ परिवर्तन ने पर्यावरण एवं प्रकृति को प्रदूषित कर दिया हैं जिसका परिणाम मानव सहित समस्त जीव–जन्तु नियमित झेल रहे हैं।

शब्दकुंजी :– कचरा, पर्यावरण, प्रदूषण, प्रबंधन एवं निपटान, इन्दौर

प्रस्तावना :–

शहरी कचरा घरों, सड़कों, मण्ड़ियों, होटलों, उद्यौगों, एवं बाजार से निकलने वाला कचरा हैं जो उपयोग के बाद स्थानीय निकाय को सौप दिया जाता हैं शहरों से मुख्यतः कागज, प्लास्टिक, पोलीथिन, बचा खाना, फल–फूल, सब्जियाँ, कांच आदि कचरे के रूप में निकलते हैं अगर कचरे का सही से प्रबंधन एवं निपटान किया जाऐ तो इससे सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्या का समाधान किया जा सकता हैं।जिस कचरे का वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधन नहीं किया जाता हैं वह कचरा पर्यावरण और समस्त जीवों के लिये खतरनाक साबित होता हैं। समस्त जीवों का स्वास्थ्य 'स्वस्थ एवं स्वच्छ' पर्यावरण पर निर्भर करता हैं।कई शहरों में आज भी कचरे के संग्रहण, एकत्रीकरण, परिवहन, एवं निपटान के लिए अलग–अलग तरीके को अपनाया जा रहा हैं। जबकि सच तो यह हैं कि कचरे को वैज्ञानिक विधि से प्रबंधन एवं निपटान किया जाऐ तो यह खत्म ही नही बल्कि आर्थिक लाभ भी प्रधान कर सकता हैं।

प्रस्तुत अध्ययन इन्दौर महानगर के कचरे का प्रबंधन एवं निपटान पर आधारित हैं। इन्दौर शहर से प्रतिदिन लगभग 900–1100 मेट्रिक टन कचरा उत्पन्न होता हैं।वर्तमान में शहर के कचरे का प्रबंधन स्थानीय निकाय ''इन्दौर नगर निगम'' द्वारा किया जा रहा हैं। शहर के कचरे का प्रबंधन एवं निपटान वैज्ञानिक तरीके से होने के कारण आज इन्दौर शहर स्वच्छता सर्वेक्षण में प्रथम स्थान पर हैं।

अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति :

इन्दौर महानगर जनसंख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा शहर है। शहर को व्यावसायिक राजधानी के नाम से भी जाना जाता है। इंदौर महानगर मालवा के पठार ''पर समुद्र सतह से 553 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। शहर की भौगोलिक अवस्थिति 22.7^0 उत्तरी अक्षांश और 75.8^0 पूर्वी देशांतर पर है। जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 530 वर्ग किलोमीटर है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इंदौर महानगर की जनसंख्या 19.94 लाख है। वर्तमान में इंदौर नगर निगम बड़ी सीमाओं में 19 क्षेत्रीय जोन एवं 85 वार्ड है। इंदौर मात्र एक ऐसा शहर है जहाँ IIM और IIT दोनों उच्च स्तरीय शैक्षणिक संस्था है। शहर की स्थापना आज से 261 वर्ष पूर्व 1715 में हुई। सबसे पहले इसका नाम इंद्रपुरी पड़ा उसके बाद धीरे–धीरे शहर को इंदौर के नाम से जानने लगे।

इंदौर में कचरे की स्थिति :–

इंदौर शहर मध्यप्रदेश के बड़े शहरों में से एक है। इस शहर को व्यावसायिक राजधानी के नाम से भी जाना जाता है। इंदौर शहर उद्योग व शिक्षा का केन्द्र होने के कारण शहर में रहने वाले लोगों की संख्या भी अधिक है। इंदौर महानगर में प्रति वर्ष 3,28,500 टन कचरा उत्पन्न होता है। जिसमें से प्रतिदिन लगभग 900–1000 टन कचरा निकलता है। शहर से कचरे की मात्रा में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है

कचरा उत्पत्ति स्थल	कचरे की मात्रा टन में
घरेलु अपशिष्ट	550 से 640 टन
बाजारों से	100 से 150 टन
उद्योगों से	35 से 45 टन
फल व सब्जी मण्डियों से	80 से 105 टन
सड़कों व गन्दी बस्तियों से	170 से 200 टन

इन्दौर महानगर में ठोस अपशिष्ट का प्रबंधन एवं निपटान

यह सही है कि वर्तमान में नगरीय ठोस अपशिष्ट का प्रबंधन एवं निपटान एक समस्या का विषय बन गया है। हमारे देश में कई शहरों में कचरा एकत्रीकरण, संग्रहण, परिवहन, प्रसंस्करण एव ंनिपटान के लिए अलग–अलग तकनीक अपनाई जा रही है। जैसे कम्पोस्टिंग, लैडफिल, वेस्ट टू एनर्जी भस्मीकरण कचरे से बायोगैस आदि

इंदौर शहर से निकलने वाले ठोस अपशिष्ट का संग्रह एवं निपटान के लिए आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। इंदौर शहर का ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, संग्रहण, एकत्रिकरण एवं निपटान बहुत ही अच्छा है। कई राज्यों के निगम अधिकारी एवं शोधार्थी शहर का कचरा प्रबंधन एवं निपटान देखने को आते है। शहर के रहवासी भी निगम के कार्य से संतुष्ट है। वर्तमान में शहर का ठोस प्रबंधन कई विकसित शहरों से अच्छा है। यहॉ प्रत्येक दिन हर वार्ड में कचरा गाडिया घर–घर जाकर कचरा एकत्रित करती है कचरा शहर से बहार ट्रेचिंग ग्राउण्ड पर ले जाया जाता है, और उसका वैज्ञानिक विधि से निपटान किया जाता है। राज्य सरकार एवं स्थानीय निकाय के द्वारा सडकों पर गीले एवं सूखे कचरे के

डस्टबीन लगाए गए हैं। तकनीकी मशीनों के द्वारा सडकों एवं गलीयों की सफाई की जाती है। कचरे को अलग–अलग एकत्रित करते है। ज्यादातर सार्वजनिक डस्टबीन को हटाया गया, जिससे इंदौर शहर का अपशिष्ट प्रबंधन की चर्चा पूरे देश में की जा रही है।

शहर में नगरीय ठोस अपशिष्ट को कम्पोस्ट करने का कार्य ए टु झेड कंम्पनी द्वारा किया जा रहा है। ए टु झेड कम्पनी कचरे को देवगुडारिया ट्रेचिंग ग्राउण्ड से कचरा लेती है। कुछ समय पहले ए टु झेड कंम्पनी स्वयं कचरा एकत्रित करने का कार्य करती थी। लेकिन कुछ समस्याओं के कारण अब नगर निगम स्वयं डोर–टु–डोर जाकर कचरा एकत्रित करने का कार्य करती है। यह गीला एवं सूखा कचरा अलग–अलग एकत्रित करता है। यही कचरा डम्पर एवं गाडियों से ट्रेचिंग ग्राउण्ड तक पहुॅचा दिया जाता है। जैविक रूप से नष्ट होने वाले कचरे को ए टू झेड कंम्पनी द्वारा पृथक किया जाता है। पृथक किए गए कचरे को कम्पोस्टिंग कर जैविक खाद बनाया जाता है। इस गुणवत्ता युक्त खाद का उपयोग कृषि कार्यो एवं पेड पौधो के लिए किया जाता है। इसके अलावा भी ठोस कचरे के प्रसंस्करण के लिए लैंडफिल तकनीक भी अपनाई जा रही है। इस तकनीक में गड्ढे खोदकर कचरे को दफनाया जाता है। यद्यपि लैडफिल खुले में कचरा डंम्पिग के मुकाबले अच्छा है।

शहर के रहवासी इन कारणों से संतुष्ट है जो निम्न है :–

1. निगम द्वारा साफ–सफाई के लिये जागरूकता।
2. घर–घर आकर कचरा संग्रहण।
3. सडकों एवं गलीयों की सफाई आधुनिक मशीनों से ।
4. गीला और सुखा कचरा अलग–अलग एकत्रित करना।
5. शहर को खुले में शौच मुक्त बनाने के लिए शहर में 400 सार्वजनिक शौचालय बनाये गये हैं।
6. अस्पताल एवं होटलो में अलग से कचरा एकत्रित करना।
7. शहर में कचरा समस्या को मोबाइल एप इंदौर 311 पर अपलोड़ करते ही समस्या तुरंत हल हो जाती है।

नगरनिगम के कचरे की एकत्रीकरण की पद्धति

इंदौर शहर शिक्षा एवं रोजगार का केन्द्र होने के कारण यहॉ पर आस–पास के कई लोग आकर शिक्षा एवं रोजगार प्राप्त करते हैं। जिससे शहर में दिन–प्रतिदिन निकलने वाल कचरे की मात्रा में वृद्धि हो रही है। जो कि नगर निगम के लिए समस्या का विषय है। कचरे की बढती मात्रा को देखते हुए इंदौर नगर निगम ने डोर–टू–डोर कचरा एकत्रित करने की प्रणाली शुरू की। इस प्रणाली को शहर में महापौर द्वारा 13 सितम्बर 2015 को वार्ड नं. 17 से शूरू की गयी है। शूरूआत में नगर निगम के पास 7 कचरा गाडियॉ थी लेकिन वर्तमान में नगर निगम द्वारा शहर के 85 वार्डो में जाकर डोर–टू–डोर कचरा एकत्रित करता है। एकत्रित करने के लिए 494 कचरा गाडिया है। जो प्रतिदिन प्रत्येक वार्ड में जाकर घर–घर से कचरा एकत्रित करती है। इन कचरा गाडियों में सूखा एवं गीला कचरे को डालने के लिए अलग–अलग भाग बने हुए है। इन एकत्रित कचरे को क्षेत्रिय कचरा स्टेशन पर ले जाया जाता है वहॉ से डम्पर द्वारा ट्रेचिंग ग्राउण्ड तक पहुॅचा दिया जाता है।

शहर में डोर–टू–डोर कचरा कलेक्शन से पहले हाथ चलित रिक्शा एवं कुछ जगह पर कूडेदान से कचरा एकत्रित करने की प्रणाली थी। लेकिन इन प्रणालियों से शहर का कचरा सही प्रकार से एकत्रित नहीं हो पा रहा था। कुछ रहवासी सडकों, नदी, तालाबों एवं आस–पास खाली जमीन में फेक देते थे। यह कचरा कई दिनों तक ना उठने की वजह से सडता रहता था, जो वातावरण के साथ मानव, जीव, जन्तुओं को भी नुकसान पहूचाता था। इसी वजह से नगर निगम ने इस प्रणाली को बन्द करके डोर–टू–डोर कचरा संग्रहण की प्रणाली को शूरू किया। आज डोर–टू–डोर कचरा एकत्रित प्रणाली को देखने के लिये देश–विदेश एवं कई राज्यों, शहरों के निगम अधिकारी देखने के लिए आ रहे है। इस प्रणाली के कारण हमारा शहर इंदौर स्वच्छ सर्वेक्षण में प्रथम स्थान पर है।

कचरा एकत्रीकरण में लगे लोगों की संख्या

इंदौर यदि आज प्रदेश में देश में स्वच्छता सर्वेक्षण में प्रथम स्थान पर है तो उसके पीछे नगर निगम के साथ सफाई कर्मचारियों की एक प्रमुख भूमिका है। जो शहर को अपना मान कर अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए दिन–रात एक करके शहर को साफ एवं स्वच्छ रखते है। ये सभी कर्मचारी अपने आबंटित वार्ड में जाकर प्रतिदिन दिन में दो बार जाकर कॉलोनियों की सफाई करते हे। यहॉ तक कि यह कर्मचारी सीवेज लाइन, गंदी नालियों को भी साफ करते है।

इंदौर नगर निगम के 85 वार्डो में 6794 कर्मचारी है। जिसमें से 1643 स्थाई कर्मचारी, 2274 अस्थाई कर्मचारी है जो 10 वर्ष से ज्यादा समय से कार्य कर रहे है। तथा 2877 अतिरिक्त अस्थाई कर्मचारी है। जिनका कार्य समय 10 वर्ष से कम है।

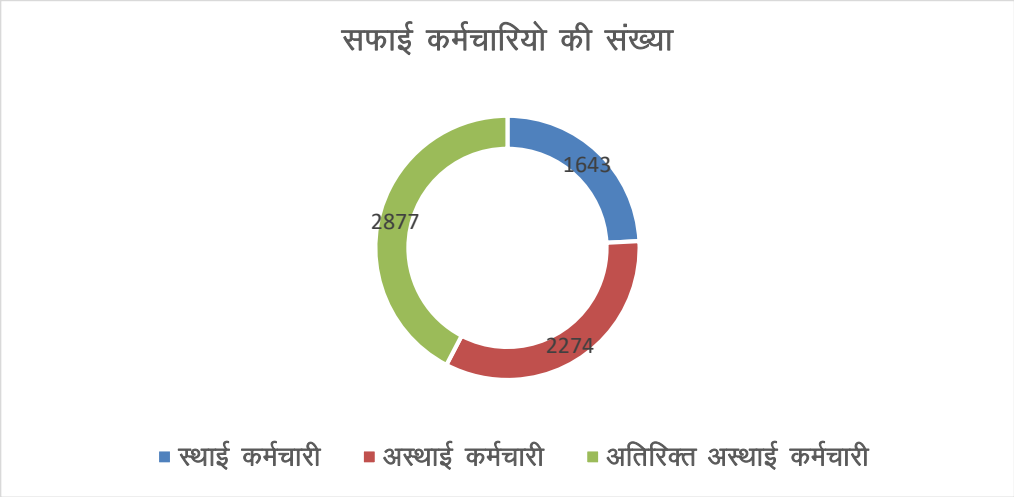

कचरा एकत्रीकरण में लगी गाड़िया, मशीन, ट्रक,डस्टबीन आदि की संख्या

494 छोटी गाड़ियाँ घर–घर से कचरा उठाने के लिए।	12549 एकल शोचालय
16 कचरा कॉम्पेक्टर	374 सार्वजनिक शौचालय
20 लार्ज हॉलिंग	400 मॉड्यूलर टॉयलेट
24 जेसीबी मशीन	425 हाथ थेला
50 डंपर	14 जैविक कचरा निष्पादन केन्द्र
1000 साईकील रिक्शा	07 ट्रांसफर स्टेशन
06 रोडस्वीपिंग (USA M/c)	3000 डस्टबिन

source -indore nagar nigam

पांच वजह जिनसे बना इन्दौर नंबर वन

निजी हाथों में नहीं सौंपी सफाई : ढाई साल पहले तक शहर की सफाई व्यवस्था ठेके पर थी। 24 वार्डों में जहाँ ठेके पर सफाई होती थी, वही पेटियों से कचरा उठाकर ट्रेचिंग ग्रांउड तक पहुंचाने का काम कम्पनी को दिया था। कंपनी को 243 रुपयें प्रति टन के हिसाब से पैसा दिया जाता था, नई परिषद् आते ही सबसे पहले कम्पनी का ठेका रद्द किया। कंपनी को दिऐ गए कचरा वाहन छीनकर निगम ने खुद सफाई व्यवस्था अपने हाथों में ली।

सफाईकर्मियों को प्रोत्साहित करना : शहर में छह सफाईकर्मियों के संगठन हैं, जिनके साथ बैंठके कीं। सफाईकर्मियों को प्रोत्साहित किया, ताकि वे समय पर काम नहीं आते थे, उनकी सेवाएं समाप्त की गई। मानीटरिंग सिस्टम को मजबुत रखा। निगम में कार्यरत 6500 सफाईकर्मियों को सही–तरीके में काम लेना शुरू किया।

एनजीओ मदद : सफाई व्यवस्था में हो रहे बदलाव को जनता स्वीकार करे और उसमें सहयोग करे इसके लिऐ पांच एनजीओ की मदद ली। अलग–अलग वार्डों में जाकर एनजीओ ने नुक्कड नाटक किए। डिब्बा गेंग बनाकर खुले में शौच जा रहे लोगों को रोकने का काम शुरू किया। अन्य संगठनों की मदद से रहवासी संघों को जोड़कर घरो में इस्टबीन रखवाना शुरू किए।

हटाई कचरा पेटिया : जब घर–घर से कचरा उठने लगा और कही कोई परेशानी नहीं आई तो धीरे–धीरे शहर से कचरा पेटियाँ हटाने का काम शुरू किया। डेढ़ हजार से ज्यादा पेटियाँ शहर से हटा दी गई। उनका कचरा सीधे ट्रेचिंग ग्राउंड तक आने लगा। लोगों ने भी इधर–उधर कचरा फेंकने के बजाऐं वाहनों में डालना शुरू किया। लोगों में घरों के बाहर कचरा फेंकने की आदत में बदलाव आया।

पहले सफाई व्यवस्था 6500 सफाईकर्मी, कचरा प्रबंधन खर्च प्रतिदिन 3.5 लाख , 1800 कचरा पेटियाँ , कचरा प्रतिदिन 600 टन
अब सफाई व्यवस्था 7000 सफाईकर्मी , कचरा प्रबंधन खर्च प्रतिदिन 4 लाख , 85 वार्डों में कचरा कलेक्शन , कचरा प्रतिदिन 1200 टन

जागरूकता कार्यक्रम :

इंदौर नगर निगम द्वारा कचरे की बढ़ती समस्याओं को देखते हुए जैसे कचरे को खुले स्थानों पर फेंकना, जगह–जगह कचरे के ढेर लगना, सीवेज लाइनों का समय समय पर सफाई न हाना वार्डो में नियमित रूप से झाडू न लगने जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए इंदौर नगर निगम के द्वारा जागरूकता कार्यक्रम चलाए गए जिनमें नुक्कड नाटक,फिल्म तथा प्रदर्शनी के माध्यम से जागरूक किया जा रहा है। नगर निगम घर–घर जाकर जागरूकता कार्यक्रम चला रही है। शहर में 6 स्वयं सेवा संगठन भी है। जिसे 450 से अधिक युवाओं लोगों को सफाई के प्रति घर–घर जाकर, कचरा संग्रहण व एकत्रित कचरे को अलग–अलग डस्टबीन में और खुले में शौच बंद करने का संदेश दे रहे है। इंदौर निगम 25000 स्कूली बच्चों को स्वच्छता के बारे में जानकारी दे चुके हैं। कचरे से होने वाले उससे हानिकारक प्रदूषण के बारे में बताते है और साथ में ही स्वच्छ रखने की शपथ दिलाते है।

वर्तमान में नगर निगम द्वारा कई जागरूकता कार्यक्रम चलाऐ जा रहे है। जो निम्न लिखित है

01. शहर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के तहत डोर–टू–डोर कचरा कलेक्शन के लिए रहवासियों एवं दुकानदारों को जागरूक करना।

02 संबंधित वार्डो में जोन अधिकारी द्वारा बाजार, दुकान, घर, गार्डन एवं धार्मिक स्थल पर जाकर कचरे से होने वाले प्रदूषण को बताना तथा कचरे के नियमों के प्रति पालन करने की शपथ दिलाना।

03 शहर में संस्थाओं घरो, दुकानदारों, हास्पीटलों, होटलों, को गीले व सूखे कचरे के प्रति जागरूक करना एवं गीले व सूखे कचरे के बारे में बताना।

04 रहवासी संघ एवं कालोनियों में जाकर सफाई से संबंधित बैठक करना तथा कचरे से होने वाली बीमारियों के बारे में बताना।

05 खुले में शौच करने से रोकना। कहॉ कितने शौचालय है और कितनी जरूरत है। उसकी सूची बनाना।

इंदौर नगर निगम के नियम एवं कानून

- इंदौर नगर निगम की सीमा में पालतु कुत्ते द्वारा गंदगी फैलाने पर क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा 500 रूपये जुर्माना वसुला जायेगा यह राशि कुत्ते के मालिक से जी जायेगी।
- अगर किसी कार, बस, या बाईक धोई या घर धोने पर सडक पर पानी फैला तो निगम कर्मचारियों द्वारा स्फाट फाईन वसुला जायेगा क्योकि सडक पर पानी जमा होने के कारण गंदगी बढती है।
- हास्पिटल परिसर व आस–पास कचरा फैलाने पर हास्पिटल प्रबंधन से जुर्माना वसुला जायेगा।
- इंदौर नगर निगम सीमा क्षेत्र में एक से ज्यादा गाय, भैस, सूअर बकरी, मूर्गी पालना और इन पशुओं को सड़कों पर छोडकर गंदगी फैलाने पर 1000 रूपये का जुर्माना लिया जायेगा।
- सार्वजनिक स्थानों पर कचना फेंकने व फैलाने पर 2 हजार रूपये का हर्जाना क्षेत्रीय स्वास्थ्य अधिकारी से व मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक द्वारा वसुला जायेगा।
- नाले–नालियों व ड्रेनेज लाईन में रासायनिक अपशिष्ट या हानिकारक अपशिष्ट बहाने पर काईवाई की जायगी।
- मलवा और मकान निर्माण सामग्री सडक एवं फुटपाथ पर फकने पर प्रति डंपर परिवहन शुल्क वसुला जायेगा।
- होटलो, छोटे–बडे रेस्टोरेंट व अन्य खाद्य पदार्थो से संबंधित संस्था, घरों से निकला, होटल का जुटन ड्रेनेज, सीवरेज व स्टार्म वाअर लाइन में फेकने व डालने पर निगम अधिकारी द्वारा कार्यवाही की जायेगी। पहली बार नियम का उल्लंघन पर 2000, तीसरी बार 3000 रूपये का दंड लिया जायेगा तथा इसके बाद भी न सुधरने पर व्यावसायिक लाइसेंस निरस्त कर दिया जायेगा।
- शराब की दुकान में डस्टबिन का उपयोग किया जावे अगर शराब की दुकान, कलाली की दुकानें के बाहर कचरा पाया गया तो दुकान मालिक से फाईन ली जावेगी।
- घर से निकलने वाले कचरे को अलग अलग डस्टबिन में डालना होगा प्रत्येक घर में दो तरह का डस्टबिन अनिवार्य है। एक हरा और दूसरा नीले रगं का हरे रंग में जैविक व नीले रंग में अजैविक खाद्य अपशिष्ट को डालना होगा।
- धार्मिक सामाजिक, राजनीतिक और अन्य रैलियों पर प्रति व्यक्ति 50 पैसे शुल्क होगा। बिल्डिंग मेटैरियल के मलवे उठाने के लिये प्रति डंपर 1000 रूपये देने होगे।

इंदौर नगर निगम द्वारा लिये जाने वाला शुल्का का विवरण :–

क्रमांक	स्त्रोत	शुल्क
01	घरो से	60 रूपये

02	ढाबों एवं रेस्टोरेंट से	300 रूपये
03	किराना , कपडे डेरी एवं सब्जी की दुकान से	100–200 रूपये
04	आफिस से	100–1000 रूपये
05	स्कूल एवं कॉलेज से	1000 रूपये
06	औद्योगिक कम्पनियों से	500–5000 रूप्ये
07	होटलो से	1000–5000 रूपये
08	गार्डन एवं 5 स्टार होटल से	5000 रूपये
09	हॉस्पिटलों से पर बैड	2 रूपये दिन
10	व्यवसायिक संस्थाओं से	450–22500 तक

स्त्रोत :–नगर निगम, इंदौर

इंदौर महानगर के कचरा के प्रबंधन एवं निपटान कैसे हो पर आम जनता, के सुझाव

✧ इन्दौर महानगर वर्तमान में भारत का सबसे स्वच्छ शहर है एवं घरो से निकलने से वाला कचरे को दो भागो सूखा एवं गीला कचरा मे संग्रहित करे एवं गीले कचरे का अपशिष्ट करके उससे मीथेन गैस एवं खाद बनाई जा सकती हैं सुखे कचरे एवं प्लास्टिक कचरे को मिलाकर सडक निर्माण किया जा सकता है इन्दौर मे हरियाली लाने लिए अधिक से अधिक फलदार वृक्ष लगवाये जाये।

सजल साहू, वार्ड क्रमांक –02

✧ इन्दौर मे कचरा प्रबंधन मे नगर निगम पालिका निगम का कार्य सराहनीय है।परन्तु नगर निगम अपने जोन पर कार्यरत् कर्मचारी पर पूर्ण नियंत्रण रखे। कही कही कचरा गाडी प्रति दिन नही जा पाती उसे प्रति दिन पहुँचाये। ठोस कचरा का भस्मीकरण शहर से दुरस्थ स्थान पर करवाये जिससे की व्यक्तियो के स्वास्थ्य पर प्रतिकुल प्रभाव न पड़े व एकत्रीकरण भी ऐसी जगह हो जहॉ से उससे पनपने वाले कीट मच्छर आदि मोहल्ले या कालोनियॉ मे नही पहुँचे।

प्रशांत गुंजाल, वार्ड क्रमांक –09

✧ डोर टू डोर कचरा एकत्रित कर उसमे जैविक और पदार्थो को अलग करे। छिलका ,भोजन जैसे पदार्थो का उपयोग खाद बनने मे करे और कागज प्लास्टिक को रिसाईकल करे जिसे रोजगार मिले और हमारा समाज भी स्वस्थ्य रहे। और इस डिपार्टमेन्ट को प्राइवेट करे दे ताकी लोग सही तरिके से काम करे। जिन घरो के सामने गंदगी हो उन पर कानूनी कारवाही हो ऐसा करने से ज्यादा सक्रिय होगे।

अलोक द्विवेदी, वार्ड क्रमांक –05

✧ जैसे हम जानते है की स्वच्छता सर्वेक्षण में इन्दौर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अतः इसी प्रकार की स्वच्छता को देखते हुऐ नगर निगम या सम्बन्धित विभाग को इस क्षेत्र मे और कुछ करने की जरूरत है लगभग 100–100 मी. के दायरे मे डस्टबिन की आवश्यकताओ पर ध्यान देने की जरूरत है। और शहर की जनसंख्या को देखते हुए यात्री बसो की संख्या मे बढोत्तरी नगर निगम की प्रमुख जिम्मेदारी है।

शुभम पटेल, वार्ड क्रमांक–73

✧ इन्दौर साफ –सफाई के मामले में भारत में नं–1 पर है परन्तु इस कचरे को नगर के बाहर इकट्ठा करने से कचरा की समस्या का और पर्यावरण पर प्रभाव से छुटकारा नही मिल सकता हैं। इस कचरे का निपटारा रिसाईकल के द्वारा कर सकते है पर इसके लिए कुडे–कचरे का निपटारा करने के लिए कचरा निपटान इंडस्टी लगाए जाए और हम भी सरफ सफाई के प्रति जागरूक और रहे आस पास मे रहने वाले व्यक्तियो को भी सफाई के प्रति सजग करते रहे यह हमारा कर्तव्य होना चाहिए

मोहित मीना, वार्ड क्रमांक –69

संदर्भ ग्रंथ सूची

- लेखक सतपाल सिंह, ''ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैन बुक ऐजेन्सी''
- ठोस अपशिष्ट प्रबंधन 'केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड'
- दबंग दुनिया, दैनिक समाचार, 05 मई, 2017
- जिला सांख्यिकी पुस्तिक, सांख्यिकी कार्यालय इंदौर मध्य प्रदेशर
- भारत का राजपत्र, पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय नई दिल्ली
- नगर निगम स्वास्थ्य विभाग, इंदौर मध्य प्रदेश
- इंदौर विकास योजना, संचालनालय, नगर तथा ग्राम निवेश, मध्य प्रदेश
  - www.google.com
  - www.imcindore.org
  - www.indore.nic.in
  - www.cpcb.nic.in
  - www.envfor.nic.in